

सूरह कलम - 68



सूरह कलम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में कलम शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। और इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में बताया गया है कि आप का चरित्र क्या है। और जो आप के विरोधी आप को पागल कहते हैं वह कितने पतित (गिरे हुये) हैं।
- इस में शिक्षा के लिये एक बाग़ के स्वामियों का उदाहरण दिया गया है। जिन्होंने अल्लाह के कृतज्ञ न होने के कारण अपने बाग़ के फल खो दिये। फिर आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। और विरोधियों के इस विचार का खण्डन किया गया है कि आज्ञाकारी और अपराधी बराबर हो जायेंगे।
- इस में बताया गया है कि आज जो अल्लाह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं वह परलोक में भी उसे सज्दा नहीं कर सकेंगे।
- आयत 48 से 50 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को काफ़िरों के विरोध पर सहन करने के निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह की बात बता रहे हैं, जो सब मनुष्यों के लिये सर्वथा शिक्षा है, आप पागल नहीं हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. नून। और शपथ है लेखनी (कलम) की
तथा उस^[1] की जिसे वह लिखते हैं।

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۝

- 1 अर्थात् क़ुर्आन की। जिसे उतरने के साथ ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लेखको से लिखवाते थे। जैसे ही कोई सूरह या आयत उतरती लेखक कलम तथा चमड़ों और झिल्लियों के साथ उपस्थित हो जाते थे, ताकि पूरे संसार के मनुष्यों

- | | |
|---|--|
| 2. नहीं है आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल। | مَا أَنْتَ بِغَفَّةٍ رَّبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۝ |
| 3. तथा निश्चय प्रतिफल (बदला) है आप के लिये अनन्त। | وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۝ |
| 4. तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं। | وَأَنْتَ لَعَلَّ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝ |
| 5. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथा वह (काफिर भी) देख लेंगे। | فَسَبِّحْهُ وَابْصُرْ ۝ |
| 6. कि पागल कौन है। | بِأَيِّكُمُ الْمَفْتُونُ ۝ |
| 7. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर हैं। | إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ |
| 8. तो आप बात न माने झुठलाने वालों की। | فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ ۝ |
| 9. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो ^[1] जायें। | وَذُوالْوُدُّ مِنْ قَبْدِهِمْ ۝ |
| 10. और बात न मानें ^[2] आप किसी अधिक | وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ۝ |

को कुर्आन अपने वास्तविक रूप में पहुँच सके। और सदा के लिये सुरक्षित हो जाये। क्योंकि अब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् कोई नबी और कोई पुस्तक नहीं आयेगी। और प्रलय तक के लिये अब पूरे संसार के नबी आप ही हैं। और उन के मार्ग दर्शन के लिये कुर्आन ही एकमात्र धर्म पुस्तक है। इसीलिये इसे सुरक्षित कर दिया गया है। और यह विशेषता किसी भी आकाशीय ग्रन्थ को प्राप्त नहीं है। इसलिये अब मोक्ष के लिये अन्तिम नबी तथा अन्तिम धर्म ग्रन्थ कुर्आन पर ईमान लाना अनिवार्य है।

- जब काफिर, इस्लाम के प्रभाव को रोकने में असफल हो गये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धमकी और लालच देने के पश्चात्, कुछ लो और कुछ दो की नीति पर आ गये। इसलिये कहा गया कि आप उन की बातों में न आयें। और परिणाम की प्रतीक्षा करें।
- इन आयतों में किसी विशेष काफिर की दशा का वर्णन नहीं बल्कि काफिरों के

शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।

11. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाता फिरता है।

هَذَا مَشَاءٌ يَنْبَغِي ۝

12. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।

مَنَاءٌ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِمٌ ۝

13. घमंडी है और इस के पश्चात् कुवंश (वर्णन संकर) है।

عُتِلَ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيٌّ ۝

14. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।

أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝

15. जब पढ़ी जाती है उस पर हमारी आयतें तो कहता है: यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ الْيَتَاتُ قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

16. शीघ्र ही हम दाग लगा देंगे उस के सूंड़^[1] पर।

سَنَسِفُهُ عَلَىٰ الْعَرْسِ ۝

17. निःसंदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला^[2] है जिस प्रकार बाग वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝

18. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने

وَلَا يَسْتَنْوُونَ ۝

प्रमुखों के नैतिक पतन तथा कुविचारों और दुराचारों को बताया गया है जो लोगों को इस्लाम के विरोध उकसा रहे थे तो फिर क्या इन की बात मानी जा सकती है?

1 अर्थात् नाक पर जिसे वह घमंड से ऊँची रखना चाहता है। और दाग लगाने का अर्थ अपमानित करना है।

2 अर्थात् मक्का वालों को। इसलिये यदि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लायेंगे तो उन पर सफलता की राह खुलेगी। अन्यथा संसार और परलोक दोनों की यातना के भागी होंगे।

चाहा) नहीं कहा।

19. तो फिर गया उस (बाग) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।

20. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।

21. अब वे एक-दूसरे को पुकारने लगे भोर होते ही:

22. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने हैं।

23. फिर वह चल दिये आपस में चुपके-चुपके बातें करते हुये।

24. कि कदापि न आने पाये उस (बाग) के भीतर आज तुम्हारे पास कोई निर्धन^[1]।

25. और प्रातः ही पहुँच गये कि वह फल तोड़ सकेंगे।

26. फिर जब उसे देखा तो कहा: निश्चय हम राह भूल गये।

27. बल्कि हम बंचित हो^[2] गये।

28. तो उन में से बिचले भाई ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?

29. वह कहने लगे: पवित्र है हमारा

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾

فَتَنَادَوُا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾

أَنِ اغْدُوا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِن كُنْتُمْ ضَارِمِينَ ﴿٢٢﴾

فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ﴿٢٣﴾

أَن لَّا يَدْخُلُهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّنْكُمِ ﴿٢٤﴾

وَعَدَا عَلٰى حَرْدٍ قَدِيرِينَ ﴿٢٥﴾

فَكَتَارَواْ وَهَمَّوْاْ بِالْوَالِئِ الْاَضَّاكُونَ ﴿٢٦﴾

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾

قَالُوا سُبْحٰنَ رَبِّنَا اَاٰنَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

1 ताकि उन्हें कुछ दान न करना पड़े।

2 पहले तो सोचा कि राह भूल गये हैं। किन्तु फिर देखा कि बाग तो उन्हीं का है तो कहा कि यह तो ऐसा उजाड़ हो गया है कि अब कुछ तोड़ने के लिये रह ही नहीं गया है। वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

पालनहार! वास्तव में हम ही
अत्याचारी थे।

30. फिर सम्मुख हो गया एक-दूसरे की
निन्दा करते हुये।

31. कहने लगे हाय अफ़सोस! हम ही
विद्रोही थे।

32. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले
में प्रदान करे इस से उत्तम (बाग़)।
हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि
रखते हैं।

33. ऐसे ही यातना होती है और आख़िरत
(परलोक) की यातना इस से भी बड़ी
है। काश वह जानते!

34. निःसंदेह सदाचारियों के लिये उन के
पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग हैं।

35. क्या हम आज्ञाकारियों^[1] को पापियों
के समान कर देंगे?

36. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा
निर्णय कर रहे हो?

37. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस
में तुम पढ़ते हो?

38. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?

39. या तुम ने हम से शपथें ले रखी हैं जो
प्रलय तक चली जायेंगी कि तुम्हें वही
मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَلََاُ وَمُؤَن ۝

قَالُوا يَٰوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

عَلَىٰ رَبِّنَا أَن يُبَدِّلَنَا خَيْرَ امْنَهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا
رُغَبُونَ ۝

كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ وَالْعَذَابُ الْآخِرَةُ أَكْبَرُ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّتِ التَّعِيمِ ۝

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۝

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۝

إِن لَّكُمْ فِيهِ لَمَآ تَخْتَرُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَةِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ
إِن لَّكُمْ لَمَآ تَحْكُمُونَ ۝

1 मक्का के प्रमुख कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हमें यही संसारिक
सुख-सुविधा प्राप्त होंगी। जिस का खण्डन इस आयत में किया जा रहा है।
अभिप्राय यह है कि अब्बाह के हाँ देर है पर अंधेर नहीं है।

40. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की ज़मानत लेता है?

سَلِّمْهُمْ أَنَّهُمْ بِذَلِكَ رَٰعِيُونَ

41. क्या उन के कुछ साझी हैं? फिर तो वह अपने साझियों को लायें^[1] यदि वह सच्चे हैं।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ۝

42. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज्दा करने के लिये तो (सज्दा) नहीं कर सकेंगे^[2]

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

43. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُفُهُمْ ذُلٌّ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ ۝

44. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (कुर्आन) को, हम उन्हें धीरे-धीरे खींच लायेंगे^[3] इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।

فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝

45. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं^[4] वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।

وَأَمِلْ لَهُمْ إِنَّا كِيدَىٰ مَتِينٌ ۝

46. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक^[5] की, तो वह बोझ से

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّعْرَمٍ مَّثْقَلُونَ ۝

1 ताकि वह उन्हें अच्छा स्थान दिला दें।

2 हदीस में है कि प्रलय के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा तो प्रत्येक मोमिन पुरुष तथा स्त्री सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ वह शेष रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिये (संसार में) सज्दे किया करते थे। वह सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की रीढ़ की हड्डी तख्त के समान बन जायेगी जिस के कारण उन के लिये सज्दा करना असंभव हो जायेगा। (बुखारी: 4919)

3 अर्थात् उन के बुरे परिणाम की ओर।

4 अर्थात् संसारिक सुख-सुविधा में मग्न रखेंगे। फिर अन्ततः वह यातना में ग्रस्त हो जायेंगे।

5 अर्थात् धर्म के प्रचार पर।

दबे जा रहे हैं?

47. या उन के पास गैब का ज्ञान है जिसे वह लिख^[1] रहे हैं?

48. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान^[2] जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।

49. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।

50. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।

51. और ऐसा लगता है कि जो काफिर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घूर कर) जब वह सुनते हों कुर्आन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल है।

52. जब कि यह (कुर्आन) तो बस एक^[3] शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।

أَمْعِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٥٧﴾

فَأَصْبَرَ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٥٨﴾

لَوْلَا أَن تَذَرِكُهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٥٩﴾

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٦٠﴾

وَأَن يَكَاذِبُوا الَّذِينَ كَفَرُوا وَالَّذِينَ يَقُولُونَ بِأَبْصَارِهِمْ لَنَا سَمْعُ الذِّكْرِ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٦١﴾

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٦٢﴾

1 या लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) उन के अधिकार में है इस लिये आप का आज्ञा पालन नहीं करते और उसी से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं?

2 इस से अभिप्राय यूनस (अलैहिस्सलाम) हैं जिन को मछली ने निगल लिया था। (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 139)

3 इस में यह बताया गया है कि कुर्आन केवल अरबों के लिये नहीं, संसार के सभी देशों और जातियों की शिक्षा के लिये उतरा है।